❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 43, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 अगस्त, 2020 से रविवार 23 अगस्त, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

कोरोना मरीजों की बढ़ती संख्या-चिंता या चिंतन?

.....नई रिसर्च में दावा किया गया है कि हवा में फैलने वाले वायरस धूल, फाइबर या सूक्ष्म कणों के जरिए भी इंसान में प्रवेश कर सकता है। अब तक यही समझा जाता रहा है कि कोरोना वायरस सिर्फ मुंह से निकलने वाले ड्रापलेट्स से फैलता है। इसलिए सभी को मास्क लगाने की सलाह दी गई। लेकिन धूल के जरिए संक्रमण के फैलने वाली खतरे की बात नई चुनौती पैदा करती है। अब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने युवाओं के लिए अलर्ट जारी करते हुए कहा है कि 20 से लेकर 40 साल तक के लोगों के माध्यम से कोरोना वायरस तेजी से फैल रहा है। इसके पीछे विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह भी कहना है कि युवा खुद भी संक्रमित हो रहे हैं और बुजुर्गों और बीमारों के लिए भी खतरा बन रहे हैं। क्योंकि युवा लोग गाइड लाइन फालो नहीं कर रहे हैं । और उनकी यही लापरवाही कोरोना संक्रमण को निमंत्रण दे रही है। युवा सावधान रहें, नियमों का सख्ती से पालन करें, सुरक्षित रहें इसी में परिवार, समाज और देश की भलाई हैं।.....

देश और दुनिया में कोरोना का कहर जारी है। भारत में मरने वालों की संख्या 57 हजार से अधिक हो गई है। जबकि मरीजों की संख्या 3 लाख से अधिक है। देश में कोरोना वायरस का पहला मरीज 7 महीने पहले सामने आया था। इन 7 महीनों में संक्रमितों की संख्या का 30 लाख तक पहुंच जाना अपने आपमें एक बड़ी चिंता का कारण है। इस बीच कोरोना की रोकथाम के लिए लाकडाउन के कई चरणों का लंबे समय तक जारी रहना, कोरोना वॉरियर्स के उत्साहवर्धन के लिए ताली और थाली बजाना, मोमबती और दीपक जलाना और अनेक अन्य कार्य भी किए गए। इसके साथ अनेकानेक लोगों ने पाखंड और अंधविश्वास को बढ़ावा देते हुए कोरोना माई की मूर्ति बनाकर पूजा की। लेकिन ये सब टोने-टोटके नकाम हो गए। कोरोना काल में ही स्वामी रामदेव जी ने भी कोरोना की आयुर्वैदिक दवाई मार्किट में लांच की लेकिन उस पर भी पाबंदी लगा दी गई। इस सब जददोजहद के बावजूद कोरोना अपनी गति से बढ़ता रहा। इस भयावह स्थिति में केवल एक बात राहत देनी वाली है कि भारत में मृतकों का प्रतिशत बहुत ही कम है। इससे पता चलता है कि भारत के नागरिकों का इम्युनिटी सिस्टम (रोग-प्रतिरोधक क्षमता) कहीं हद तक विदेशियों से अच्छी है।

कोरोना मरीजों की संख्या को लेकर बीच-बीच में शंकाएं भी व्यक्त की जाती रही है। शंका करने का कारण भी है। क्योंकि भारत में आबादी के हिसाब से टेस्ट बहुत कम हुए हैं। जब तक टेस्ट नहीं होंगे कैसे पता चलेगा कि हकीकत में कितने लोग कोरोना को साथ लेकर घूम रहे हैं। हालांकि देश में टेस्टिंग क्षमता में काफी वृद्धि हुई। 31 जनवरी 2020 तक भारत में मात्र 49 टेस्ट हुए थे और आज 3 करोड़ से ज्यादा लोगों की जांच पूरी हो चुकी है। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि देश की आबादी 130 करोड़ से ज्यादा है। विपक्षी राजनीतिक पार्टियां कम टेस्टिंग को लेकर सरकार पर हमला बोलती रही है। खैर कुछ भी हो इस कोरोना की आपदा ने व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया को हिला कर रख दिया है। कोरोना से संक्रमण को लेकर तरह-तरह से चौकाने वाली रिपोर्टी का आना भी जारी है। नई रिसर्च में दावा किया गया है कि हवा में फैलने वाले वायरस धूल, फाइबर या सूक्ष्म कणों के जरिए भी इंसान में प्रवेश कर सकता है। अब तक यही समझा जाता रहा है कि कोरोना वायरस सिर्फ मुंह से निकलने वाले ड्रापलेट्स से फैलता है। इसलिए सभी को मास्क लगाने की सलाह दी गई। लेकिन धूल के जरिए संक्रमण के फैलने वाली खतरे की बात नई चुनौती पैदा करती है। अब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने युवाओं के लिए अलर्ट जारी करते हुए कहा है कि 20 से लेकर 40 साल तक के लोगों के माध्यम से कोरोना वायरस तेजी से फैल रहा है। इसके पीछे विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह भी कहना है कि युवा खुद भी संक्रमित हो रहे हैं और बुजुर्गों और बीमारों के लिए भी खतरा बन रहे हैं। क्योंकि युवा लोग गाइड लाइन फालो नहीं कर रहे हैं । और उनकी यही लापरवाही कोरोना संक्रमण को निमंत्रण दे रही है। युवा सावधान रहें, नियमों का सख्ती से पालन करें, सुरक्षित रहें इसी में परिवार, समाज और देश की भलाई हैं।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कोरोना की महा आपदा को ध्यान में रखते हुए अपने संबोधन में कहा था कि आपदा को अवसर में बदल कर भारत आत्म निर्भर बनेगा। उनकी इस घोषणा और संदेश का सभी ने हृदय से स्वागत किया। लेकिन आज समाज में देखा जा रहा है कि इस आपदा के अवसर को लोग मुनाफा कमाने के लिए प्रयोग कर रहे हैं। अक्सर यह देखा भी जाता रहा है कि जब कोई बड़ा सकट सामने आता है उस समय संवेदनाओं की आड़ में भ्रष्टाचार का वातावरण भी पनपता है। क्योंकि भोली-भाली जनता संकट में उलझी होती है और तमाम अवसरवादी लोग उसका लाभ उठाकर अपनी जेबे और तिजोरियां भरने में लग जाते हैं। आज बाजार में नकली सेनिटाइजर, महंगे मास्क और इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हाथ धोने के साबुन से लेकर खाने-पाने की और मिठाईयों की चीजों में बरकत हो रही हैं। सेवा की सवैधानिक शपथ लेने वाले भी भ्रष्टाचार की बहती गंगा में हाथ ही नहीं धोते बल्कि नहाते नजर आ रहे हैं। क्योंकि इनके लिए भावनाओं का कोई महत्व नहीं होता। प्राइवेट हास्पिटलों में डॉक्टर लोग भी खूब मनमानी कर रहे हैं। जन स्वास्थ्य से जुड़ें हुए मामलों में बड़ी गड़बड़ी दिखाई दे रही है। स्वास्थ्य प्रणालियों में दवाइयों और उपकरणों की आपूर्ति की खरीद में भी भ्रष्टाचार के लिए सबसे अधिक उपजाऊ वातावरण बनाया जा रहा है। युनाइटेड नेशनस आफिस आन ड्रग्स एवं क्राइम के मुताबिक विश्व स्तर पर खरीद पर व्यय किए गए कुल धन का लगभग 10 से 25 प्रतिशत भ्रष्टाचार में चला जाता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है

- शेष पृष्ठ 3 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 30 अगस्त, 2020 दोपहर : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 30 अगस्त, 2020** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **दोपहर 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों को बैठक का ऐजेण्डा विधिवत् भेज दिया गया है।

अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के
प्रचारक-सम्वर्द्धकों को एक्टीवा स्कूटी भेंट कर दिया आशीर्वाद

महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के अंतर्गत पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी द्वारा आर्य समाज के प्रचार कार्यों को गति देने हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री श्री विनय आर्य जी के मार्गदर्शन व नेतृत्व में दिल्ली के तीन प्रचारकों सर्वश्री धर्मवीर आर्य, लक्ष्य आर्य व करन आर्य को तीन एक्टिवा स्कूटी 17 अगस्त 2020 को प्रदान की गई। इस कार्य में महाशय जी द्वारा फरवरी 2020 में भी दिल्ली के अन्य 5 प्रचारकों को स्कूटी व एक मोटर साइकिल दी जा चुकी है।

- संयोजक

वेद-स्वाध्याय

मन्त्र महिमा

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद् गुहा निषीदन्।
विदन्तीमत्र नरो धियन्धा हृदा यत्तष्टान् मन्त्राँ अशंसन्।। ऋ०१/६७/२
ऋषिः **पराशरः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **भुरिक्पंक्तिः।।**

शब्दार्थ - हे अग्निदेव **विश्वानि** = सम्पूर्ण **नृम्णा** = ऐश्वर्यों को **हस्ते** = हाथ में **दधानः** = लिए हुए **देवान्** = देवों, दिव्य गुणों को **अमे** = अपने घर में, अपनी ज्ञानमय शरण में **धात्** = धारण करता है, इस प्रकार वह **गुहा** = [हृदय की] गुफा में **निषदन्** = बैठा हुआ, छिपकर बैठा हुआ है। **अत्र** = इस हृदय गुफा में **ईम्** = इसको **धियन्धा** = बुद्धि और कर्म को ठीक प्रकार धारण करने वाले **नरः** = पुरुष **विदन्ति** = तब पा लेते हैं **यत्** = जब वे **हृदा** = हृदय से, हार्दिक भाव से **तष्टान्** = निकले हुए, तेजोयुक्त हुए-हुए **मन्त्रान्** = मन्त्रों को **अशंसन्** = उच्चारण करते हैं।

विनय - मन्त्रों की बड़ी महिमा है। मन्त्रों की शक्ति अदभुत है। मन्त्रशक्ति से हम जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। यह ठीक है कि हम प्रतिदिन वेदमन्त्रों का बहुत उच्चारण करते हैं, तो भी हमें उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता। इसका कारण यह है कि ये मन्त्र हमारे हृदय से नहीं निकले होते। जो भक्तलोग हृदय से घड़े हुए, हृदय की गम्भीर गहराई से निकले हुए, हार्दिक भावना से तीक्ष्ण हुए और पवित्र अन्तःकरण की गम्भीर, सूक्ष्म तथा विस्तृत ज्ञानशक्ति से तेजोयुक्त होकर वेद-मन्त्रों को बोलते हैं, वे अपने ऐसे मन्त्रोच्चारण द्वारा उस 'ईक्षण' नामी दिव्य शक्ति को संचालित कर देते हैं जिससे बढ़कर संसार में अन्य कोई शक्ति नहीं है। इसलिए वे नर, वे सच्चे पुरुष, अपने अन्दर ही सब कुछ पा लेते हैं। वे 'धी' को धारण करनेवाले, स्थितप्रज्ञ होने और निष्काम कर्म करने से हृदय-(आत्म) -शुद्धि पा लेनेवाले, अपने हृदय में ही सब-कुछ पा लेते हैं। हृदय की गुफा में जो अग्निदेव छिपे बैठे हैं, सब ऐश्वर्यों को हाथ में लिये हुए और वेदों को अपने में धारण किये हुए हमारे अग्निदेव छिपे बैठे हैं, उन्हें पा लेते हैं। इस प्रकार मन्त्र-शक्ति द्वारा अग्निदेव को पा लेने पर, प्रकट कर लेने पर, फिर संसार का कौन-सा ऐश्वर्य है, कौन-सा दिव्य गुण है जिसे ये 'नर' नहीं पा लेते! संसार के सम्पूर्ण धन-ऐश्वर्यों को हाथ में रक्खे हुए, देवों (दिव्य गुणों) को अपनी ज्ञानमय शरण में लिये हुए ये हमारे अग्निदेव हमारे हृदय में ही स्थित हैं, पर हम हैं कि 'मन्त्रों का उच्चारण करके उन्हें पाते नहीं, हृदय से मन्त्रोच्चारण करना तक नहीं सीखते, हृदय से निकले मन्त्रों से इन्हें प्राप्त नहीं करते।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या नई शिक्षा नीति से इतिहास का भला होगा?

देश में नई शिक्षा नीति आने के बाद सभी के मन में एक सवाल जरूर उभरकर सामने आया है कि क्या अब इतिहास बदला जायेगा। क्योंकि देश में नयी शिक्षा नीति आने वाले दिनों में शायद पूर्णरूप से लागू हो जाएगी। नई शिक्षा नीति का वादा बीजेपी ने अपने घोषणापत्र में भी किया था। अब तक तीन शिक्षा नीति देश को मिल चुकी हैं लेकिन इस नई शिक्षा नीति के सामने सवाल है कि क्या इतिहास भी बदला जायेगा या पुराने ढर्रे पर ही चलेगा? या फिर आगे भी इसमें इरफान हबीब, रोमिला थापर, रामचन्द्र गुहा जैसे लोग बने रहेंगे?

इतिहास की बात इसलिए क्योंकि अभी तक हमें पढाया जा रहा है कि औरंगजेब टोपी सिलकर गुजारा करता था। अकबर एक महान उदार राजा था। शेरशाह सूरी ने सड़कें बनवाई थी, किसी मुगल ने ताजमहल तो किसी ने लालकिला बनवाया। कुछ ऐसी ही कहानियाँ हम बचपन से पढतें आ रहे हैं, यदि यह सब सच है तो फिर लाखों हिन्दुओं का कत्ल और महिलाओं की अस्मत लूटने वाले मुगल बादशाह कौन थे?

जवाब आसान है लेकिन एक समस्या है जिसे नकारवाद या नास्तिवाद कहा जाता है इसमें ऐतिहासिक सबूतों को विकृत किया जाता है, यानि पहले से स्वीकार किये गये इतिहास वैधानिक अकादमिक पुनर्व्याख्याओं को अलग ले जाता है और अपना काल्पनिक विचार उस देश की शिक्षा व्यवस्था पर थोप दिया जाता है।

आजकल इन्हीं नकारवादियों या नास्तिकवादियों का हमारे इतिहास पर बोलबाला है। यही कारण है कुछ दिन पहले मध्य शिक्षा परिषद् यानी बंगाल सैकेण्डरी एजुकेशन की कक्षा 6 की इतिहास की पाठ्य पुस्तक में पिछले कई वर्षों से झूठा और बाल मनों में जहर भरने वाला इतिहास पढ़ाया जा रहा है। इस पुस्तक में जहां रामायण के काल को नाकारा गया है वहीं यह भी लिखा है कि राम भारत के मूलनिवासी नहीं थे। वे एक घुमंतू कबीले के सरदार थे। इस इतिहास की पुस्तक की संपादक हैं शरीन मसूद जो श्रीराम को आक्रमणकारी तक बताती हैं और रावण को भद्र पुरुष कहती हैं। ये शरीन मसूद वही कट्टरपंथी है जिसने कुछ समय पहले क्रांतिकारी खुदीराम बोस को आतंकवादी तक कहा था।

बरहाल अब बात करते हैं नकारवादियों कि तो बेल्जियन स्कॉलर कॉनराद इलिस्ट की 1992 में एक पुस्तक आयी थी "नगेसम इन इंडिया कनक्युलिंग दा रिकॉर्ड ऑफ इस्लाम" इसका विस्तृत संस्करण 2014 में आया और 2016 में इसे पुनः प्रकाशित किया गया। अरबी, उर्दू और अंग्रेजी में उपलब्ध हजार सालों के इस्लामी स्रोतों से ही एकत्र करके दो हजार से अधिक मंदिरों के विध्वंस की विवरणों समेत प्रमाणित संदर्भ सूची इसमें बनाई है। अल-बिलाधूरी से शुरू करके, जिसने नवीं सदी के उतरार्द्ध में अरबी में लिखा था, सैयद महमुदल हसन, जिन्होनें बीसवीं सदी के चौथे दशक में अंग्रेजी में लिखा, इन ग्यारह सौ सालों में फैले हुए अस्सी इतिहास पुस्तकों से इसमें संदर्भ एकत्र किए गए हैं।

हालाँकि सीताराम गोयल की किताब 'हिंदू मंदिर, उनका क्या हुआ?' किताब का इसे अंग्रेजी संस्करण भी कह सकते हैं। इस पुस्तक में 61 शासकों, 63 सैनिक सरदारों और 14 सूफियों द्वारा 154 स्थानों में पश्चिम में खुरासान से लेकर पूर्व में त्रिपुरा तथा उत्तर में ट्रांस ओक्सियाना से लेकर दक्षिण में तमिलनाडु तक 1100 सालों में बड़े और छोटे हिन्दू मंदिरों के विध्वंस का उल्लेख है। अधिकांश मामलों में मंदिरों को तोड़कर मस्जिद, मदरसे और खानकाह आदि बनाये गए और वो भी तोड़े गए मंदिरों की सामग्री से। हर बार अल्लाह का शुक्र अदा किया गया जिसने इन मूर्तिभंजकों को इस पवित्र कृत्य द्वारा मजहब की सेवा करने योग्य बनाया। इन नायकों में कुछ नाम बार बार आये हैं, जैसे- मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनी, इल्तुतमिश, अलाउद्दीन खिलजी,

.....हमें पढाया जा रहा है कि औरंगजेब टोपी सिलकर गुजारा करता था। अकबर एक महान उदार राजा था। शेरशाह सूरी ने सड़कें बनवाई थी, किसी मुगल ने ताजमहल तो किसी ने लालकिला बनवाया। कुछ ऐसी ही कहानियाँ हम बचपन से पढतें आ रहे है, यदि यह सब सच है तो फिर लाखों हिन्दुओं का कत्ल और महिलाओं की अस्मत लुटने वाले मुगल बादशाह कौन थे? जवाब आसान है लेकिन एक समस्या है जिसे नकारवाद या नास्तिवाद कहा जाता है इसमें ऐतिहासिक सबूतों को विकृत किया जाता है, यानि पहले से स्वीकार किये गये इतिहास वैधानिक अकादमिक पुनर्व्याख्याओं के को अलग ले जाता है और अपना काल्पनिक विचार उस देश के शिक्षा व्यवस्था पर थोप दिया जाता है। .....

फिरोज शाह तुगलक, अहमद शाह प्रथम, गुजरात का महमूद बेगधा, सिकंदर लोदी और औरंगजेब। तो बेल्जियन स्कॉलर कॉनराद कहते है कि भारत में बुद्धिजीवियों एवम इतिहासकारों का एक वर्ग मानवता के विरुद्ध किये गए अपराध को अस्वीकार करता है और ऐसे बुद्धिजीवियों को नकारवादी नास्तिवादी कहा जाता है।

कॉनराद इलिस्ट ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि भारतवर्ष में जितनी मूर्खता से नकारवादी प्रचलित है, वैसा विश्व में कहीं नहीं है। इस्लाम की विध्वंसक भूमिका के अस्तित्व को अस्वीकार करने की नकारवादी जिहाद परम्परा लगभग 1920 से शुरू हुई। कांग्रेस द्वारा 1931 में कानपुर में हुए दंगे के बाद इस्लाम की नकारात्मक भूमिका को अस्वीकार कर इस्लाम की इमेज को बदलने का प्रयास किया। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अलीगढ़ स्कूल के इतिहासकारों की रही, जिसमें प्रमुख रूप से मोहम्मद हबीब का नाम है, नकारवादी मोहम्मद हबीब द्वारा इतिहास का पुनर्लेखन किया गया और इस्लाम की विध्वंसक भूमिका को कम करने का प्रयास किया गया।

इसमें चार घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर लिखा गया है, नम्बर एक मुस्लिम शासक बहुत उदार और नरम दिल के थे, दूसरा उनका आक्रमण का उद्देश्य धार्मिक न होकर आर्थिक था। तीसरा था नस्लीय कारण यानि कि आक्रांता तुर्की थे, जो मूल रूप से असभ्य और बर्बर थे और इस्लाम को सही ढंग से समझ नहीं पाए थे। चौथा कारण यह था कि शरियत इतनी अच्छी थी उसमें जातिवाद नहीं था तो भारत के नीची जाति के लोग स्वेच्छा से इस्लाम में धर्मान्तरित हो गये।

- शेष पृष्ठ 7 पर

बैंगलूरु हिंसा : कहां गया असहिष्णुता वाला गैंग?

बैं गलुरु शहर जिसे देश की सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया के नाम भी जाना जाता है। अचानक ग्यारह अगस्त को पकड़ो, मारो, ये गया, वो गया के शोर के साथ आगजनी, हिंसा, लूटपाट शुरू हुई और देखते ही देखते करोड़ो की संपत्ति जलाकर राख कर दी। कांग्रेस पार्टी के विधायक अखंड ए श्रीनिवास मूर्ति घर से 3 करोड़ की संपत्ति की लूटकर भाग निकले। जिन्हें लूट हाथ नहीं लगी, उन्होंने करीब साढ़े तीन सौ गाड़ियों को फूंक डाला। अब 11 अगस्त को बेंगलुरु में हुई हिंसा की जांच रिपोर्ट कह रही है कि यह हिंसा अचानक नहीं पूर्व नियोजित थी। शुरुआती जांच में सामने आया था कि मजहबी उपद्रवी आगजनी के लिए ज्वलनशील पदार्थ लेकर आए थे। फरेंसिक साइंस लैब को उपद्रवियों द्वारा जलाई गई पुलिस की गाड़ियों से पेट्रोल, डीजल, केरोसीन और पेंट थिनर के निशान मिले हैं।

हिंसा के बाद पता है कि विधायक अखंड ए श्रीनिवास मूर्ति के भतीजे नवीन ने हिन्दू देवी-देवताओं के अपमान कर रहे एक विशेष समुदाय के व्यक्ति की पोस्ट पर कथित आपत्तिजनक कमेन्ट कर दिया था, जिससे विशेष समुदाय की भावना आहत हो गयी थीं और उन्होंने जमकर शहर में बवाल मचाया। हालाँकि किसी भी सभ्य समाज में मार-काट, उपद्रव, हिंसा, आगजनी, अराजकता आदि के लिए कोई जगह नहीं होती। भारत तो संवाद, सहयोग, सहजीविता का दूसरा नाम है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-मन की भावनाओं-आकांक्षाओं, सहमति-विरोध को प्रकट करने के अनेकानेक वैध स्वरूप और माध्यम होते हैं। उसमें असहमति, आलोचना, अहिंसक आंदोलन आदि के लिए भी पर्याप्त स्थान होता है। परंतु मार-काट, लूट-खसोट, हिंसा, आगजनी, चाहे वह किसी भी कारण या मकसद से किया गया हो- असभ्य और अमानुषिक आचरण ही कहलाएगा। ऐसी घटनाएँ मनुष्यता को शर्मसार करती हैं। पहले दिल्ली और अब बेंगलुरु में हुई हिंसा एवं आगजनी ने यह सोचने पर विवश कर दिया है कि क्या हमारे समाज के एक तबके ने शताब्दियों पूर्व की कबीलाई मानसिकता का परित्याग कर दिया है?

क्या इसे किसी भी सूरत में जायज ठहराया जा सकता है? क्या जिंदा लोगों के जान-माल से अधिक मूल्यवान-महत्वपूर्ण कोई पीर-पैगंबर हो सकता है? श्रद्धा और आस्था को इस देश से बेहतर क्या कोई और देश भी समझ सकता है?

अब सवाल यह भी कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई देने वाले क्या केवल कुछ चुनिंदा मुद्दों या समुदायों तक इसे सीमित रखना चाहते हैं? क्या लोकतंत्र में किसी को यह छूट दी जा सकती है कि वह पुलिस-प्रशासन से लेकर पूरे-के-पूरे शहर को बंधक बना ले? बेंगलुरु के केजी हल्ली और डीजे हल्ली थाने में जो हुआ वह अराजकता की पराकाष्ठा थी। हिंसा और अराजकता की ऐसी बदरंग तस्वीरों के सुर्खियाँ बटोरने के बावजूद तमाम बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों का

..... क्या इसमें भी कोई दो राय है कि यही विरोध या प्रदर्शन हिंदू देवी-देवता या धर्म-आस्था को ठेस पहुँचाने पर हो रहा होता तो देश का सेकुलर ब्रिगेड गला फाड़-फाड़कर चिल्लाता कि क्या तुम्हारे देवी-देवता, धर्म-आस्था का आधार इतना कमजोर है कि किसी की टिप्पणी- पोस्ट से चरमरा कर ढह जाएगा? सेकुलरिज्म के इस दोहरे और दोगले रवैये ने देश को सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया है। अचरज यह भी कि 'आतंक का कोई धर्म नहीं होता' का कोरस गाने वाले धर्म में असहिष्णुता अवश्य ढूँढ़ लाते हैं। अराजकता के व्याकरण में विश्वास रखने वाला समूह चेहरा और वेश बदल- बदलकर देश को लहूलुहान कर रहा है और कथित पंथनिरपेक्ष धड़ा एकदम चुप है। कभी दिल्ली, कभी कानपुर, कभी केरल तो कभी बेंगलुरु। स्थान अलग- अलग, पर हिंसा एवं उपद्रव की प्रवृत्ति, प्रकृति और पृष्ठभूमि एक जैसी। शाहीन बाग, जामिया, अलीगढ़, कानपुर, केरल या बेंगलुरु में हुई हिंसा-आगजनी किसी सुनियोजित साजिश की ओर इशारा करती हैं। महज चंद घण्टों में बमों-असलहों-पत्थरों से लैस भारी भीड़ का जुटना बिना पूर्व तैयारी और व्यापक नेटवर्क के संभव नहीं। .....

इस पर मौन साध जाना पाखंड से भरा दोहरा आचरण है। आए दिन असहिष्णुता का राग अलापने वाले लोग ऐसे हिंसक दृश्यों में समुदाय-विशेष की एकपक्षीय संलिप्तता देखकर प्राय: मौन साध जाते हैं। क्या यह उपद्रवियों एवं दंगाइयों के मनोबल को बढ़ाना नहीं है? क्या यह उनके कुकृत्यों को मौन सहमति प्रदान करना नहीं है? क्या इसमें भी कोई दो राय है कि यही विरोध या प्रदर्शन हिंदू देवी-देवता या धर्म-आस्था को ठेस पहुँचाने पर हो रहा होता तो देश का सेकुलर ब्रिगेड गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा होता कि क्या तुम्हारे देवी-देवता, धर्म-आस्था का आधार इतना कमजोर है कि किसी की टिप्पणी-पोस्ट से चरमरा कर ढह जाएगा? सेकुलरिज्म के इस दोहरे और दोगले रवैये ने देश को सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया है। अचरज यह भी कि 'आतंक का कोई धर्म नहीं होता' का कोरस गाने वाले धर्म में असहिष्णुता अवश्य ढूँढ़ लाते हैं। अराजकता के व्याकरण में विश्वास रखने वाला समूह चेहरा और वेश बदल-बदलकर देश को लहूलुहान कर रहा है और कथित पंथनिरपेक्ष धड़ा एकदम चुप है। कभी दिल्ली, कभी कानपुर, कभी केरल तो कभी बेंगलुरु। स्थान अलग-अलग, पर हिंसा एवं उपद्रव की प्रवृत्ति, प्रकृति और पृष्ठभूमि एक जैसी। शाहीन बाग, जामिया, अलीगढ़, कानपुर, केरल या बेंगलुरु में हुई हिंसा-आगजनी किसी सुनियोजित साजिश की ओर इशारा करती हैं। महज चंद घण्टों में बमों-असलहों-पत्थरों से लैस भारी भीड़ का जुटना बिना पूर्व तैयारी और व्यापक नेटवर्क के संभव नहीं। विदित हो कि इन सभी घटनाओं में बार-बार कट्टर इस्लामिक संगठन पी.एफ.आई. और उसके राजनीतिक चेहरे एस.डी.पी.आई. का नाम आ रहा है। केवल इतना ही नहीं इन दोनों संगठनों को सहयोग देने वालों का संजाल भी देश-विदेश तक फैला हुआ है। इसमें राजनेताओं एवं रसूखदारों की संलिप्तता को भी स्वतंत्र जाँच का विषय बनाना चाहिए।

पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया वही संगठन है जो शाहीनबाग के प्रदर्शनकारियों को फंडिंग कर रहा था। उस समय लगभग 15 प्रदर्शनकारियों के खातों में 1 करोड़ से अधिक की राशि इसी संगठन के द्वारा जमा कराई गई थी। बल्कि एनआइए की एक रिपोर्ट के अनुसार इस संगठन की आतंकवादी घटनाओं में भी संदिग्ध भूमिका रही है। इसने घोषित रूप से स्वयं को गरीबों-पिछड़ों के लिए काम करने वाला संगठन तो बताया है पर इसका असली मकसद मत परिवर्तन एवं मजहबी कट्टरता को बढ़ावा देना रहा है। और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया इसकी राजनीतिक शाखा है।

परंतु इससे भी आश्चर्यजनक यह है कि इन दोनों संगठनों और इनकी देश-विरोधी गतिविधियों पर अधिकांश राजनीतिक दलों ने मौन साध रखा है। हद तो यह है कि दलितों के हितों की पैरोकारी का दावा करने वाले तमाम राजनीतिक दल बेंगलुरु-हिंसा पर अपना मुँह तक खोलने को तैयार नहीं हैं। एक दलित विधायक के आवास पर उपद्रवियों-दंगाइयों द्वारा किए गए तोड़-फोड़ एवं आगजनी का सामान्य विरोध करने तक का वे साहस नहीं जुटा पाए। इसे ही कहते हैं घोर तुष्टिकरण की राजनीति। विरोध तो दूर, पीएफआई जैसे कट्टर इस्लामिक संगठन का केस दिग्गज काँग्रेसी नेता कपिल सिब्बल लड़ते रहे हैं। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी इस संगठन के सार्वजनिक जलसे में शिरकत कर चुके हैं। आप के तमाम नेताओं का पीएफआई से प्रत्यक्ष-परोक्ष संबंध उजागर हो चुका है। ऐसे में सवाल है कि वोट-बैंक की खातिर आखिर कब तक देश को सांप्रदायिकता और दंगे की आग में झोंकने का षड्यंत्र चलता रहेगा? जैसे काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ाई जा सकती, वैसे ही तुष्टिकरण की फसल भी बार-बार नहीं काटी जा सकती। तुष्टीकरण की विभाजनकारी राजनीति पर अविलंब विराम अत्यावश्यक है। यह न देश के लिए लाभदायक है न अल्पसंख्यकों के लिए।

अल्पसंख्यक समुदाय को यह समझना होगा कि तुष्टीकरण की इन भयावह प्रवृत्तियों का सर्वाधिक नुकसान उन्हें ही उठाना पड़ा है। कट्टरता की अफीम खिलाकर उन्हें गरीबी एवं बेरोजगारी की अंधी सुरंग में भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि कोई भी समुदाय भीड़ की तरह सोचना छोड़कर जागरूक मतदाता वर्ग या व्यक्ति की तरह सोचे और जिम्मेदार नागरिक की भाँति देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। इस्लाम को मानने वालों की बड़ी समस्या ही यही है कि वे मंगल और चाँद पर पहुँचते कदमों के इस आधुनिक युग में भी कबीलाई समूह या झुंड की तरह सोचते हैं, जबकि उन्हें स्वतंत्र-समग्र व्यक्ति की तरह सोचना चाहिए और हर व्यक्ति या समुदाय को कानून और संविधान को अपना काम करने देना चाहिए और समाज के सभी वर्गों-समुदायों को एकजुट होकर राष्ट्रीय विकास एवं सौहार्द्र में अपना योगदान देना चाहिए।

- राजीव चौधरी

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोरोना मरीजों की बढ़ती संख्या-चिंता ....

कि सरकारें आपदा से निपटने के लिए किस तरह से भ्रष्टाचार का सामना कर रही हैं।

कोरोना को लेकर चल रहे सघंर्ष को देखते हुए आज यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन जो इच्छा और आकांक्षा के आधार पर जीवन्त माना जाता है वहां मृत्यु का दर हावी हो रहा है। बेरोजगारी और बेकारी बढ़ती जा रही है। अंधविश्वास और पाखंड की बढ़ोतरी हो रही है। नास्तिक और कम्नुयिस्ट लोग भी आसमान की ओर हाथ उठाकर प्रार्थना करने के लिए बेबस और लाचार हैं। इस संकट की घड़ी में हमें प्रार्थना और पुरुषार्थ दोनों का तालमेल स्थापित करना होगा। हर व्यक्ति को स्वयं अपना चिकित्सक बनना होगा। अपने खाने-पीने से लेकर योगासन, व्यायाम, प्रणायाम और ध्यान की आदत डालनी होगी। ईश्वर की उपासना से ही आत्मबल बढ़ता है। केवल चिंता नहीं चिंतन भी करना होगा। सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करते हुए सारे कार्य करने होंगे और साथ में सावधान भी रहना होगा। संसार में कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। हर व्यक्ति को अपने-अपने स्तर पर स्वयं समाधान ढूढ़ना होगा। इस महामारी की दवाई भी बाजार में आएगी लेकिन जब तक नहीं आती तब तक हमें स्वयं आयुर्वैदिक काढ़े जैसी दवाईयों का प्रयोग करना होगा।

मन की एकाग्रता और नियन्त्रण शक्ति

- आचार्य अनिल शास्त्री

.....जब पूरी तरह से मन किसी एक स्थान पर या कार्य पर एकाग्र हो जाए तो फिर यही मन कमाल करके दिखाता है। लोग कहते हैं कि पढ़ने के लिए जा रहे हो तो अपना पूरा मन लगाकर पढ़ना, काम करने के लिए जा रहे हो तो पूरा मन लगाकर के काम करना। हर कोई यही कहता है कि मन लगाकर के हर काम करिए। मन लगाकर के खेलना, मन लगाकर पढ़ना, आधा-अधूरा होकर नहीं रहना। क्योंकि मन जितना भी किसी चीज में रम जाएगा उतना ही चमत्कारी कार्य करेगा। आधे-अधूरे मन से कोई कुछ भी नहीं कर सकता। जिस आदमी को अपने मन को कहीं लगाना आ जाए तो उसके भीतर रस आना शुरू हो जाता है। जैसे साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, जिस भी विषय पर मन टिक गया, जिसमें मन पूरी तरह से लग गया तो मन लगने का मतलब है कि मन को उसमें रस आना शुरू हो गया।.....

मानव देह में विशेष शक्तियों को अनुभव किया जाता है, एक शरीर की शक्ति, दूसरी मन की शक्ति, किंतु इनसे भी बड़ा होता है-आत्म बल। अगर किसी का आत्मा बलवान है तो एक कमजोर, पतले-से शरीर का दिखने वाला व्यक्ति भी वह चमत्कार कर सकता है, जो मोटा-तंदरूस्त दिखाई देने वाला आदमी भी नहीं कर सकता। क्योंकि शरीर की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि का बल, और अन्य जितनी भी शक्तियां मनुष्य के भीतर होती हैं, उन सब शक्तियों का केंद्र एक ही होता है उसका नाम है आत्मा और जो संपूर्ण संसार को गति देने वाला है, उस परम सत्ता का नाम परमात्मा है। वैसे दोनों सत्ताएं मनुष्य के शरीर में ही विराजमान हैं। इसलिए मनुष्य जितना- जितना अपनी शक्तियों को जगाता है, प्रयोग करता है, ये उतना-उतना बढ़ती जाती हैं। जैसे मीठे पानी का कुआं होता है, कुएं से जितना-जितना पानी आप निकालेंगे, उसमें उतना-उतना ही बढ़ता जाएगा। क्योंकि जल अपने अक्षय स्रोत से जुड़ा हुआ है। मनुष्य को भी अपने आत्मा से जुड़ने के लिए अपने श्वासों पर ध्यान टिकाते-टिकाते अपने मन को एकाग्र करना चाहिए और मन की एकाग्रता ही मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। मनुष्य को अगर संसार में सफलता पानी हो या ईश्वर की उपासना में आगे बढ़ना हो मन की एकाग्रता दोनों ही स्थितियों में आवश्यक है।

मनुष्य ज्यादातर आधे-अधूरे मन से कार्य करके पूरी सफलता पाने की कोशिश करता है। लेकिन अधूरे मन से किए गए कार्य में सफलता भी अधूरी ही मिलती है। जब पूरी तरह से मन किसी एक स्थान पर या कार्य पर एकाग्र हो जाए तो फिर यही मन कमाल करके दिखाता है। लोग कहते हैं कि पढ़ने के लिए जा रहे हो तो अपना पूरा मन लगाकर पढ़ना, काम करने के लिए जा रहे हो तो पूरा मन लगाकर के काम करना। हर कोई यही कहता है कि मन लगाकर के हर काम करिए। मन लगाकर के खेलना, मन लगाकर पढ़ना, आधा-अधूरा होकर नहीं रहना। क्योंकि मन जितना भी किसी चीज में रम जाएगा उतना ही चमत्कारी कार्य करेगा। आधे-अधूरे मन से कोई कुछ भी नहीं कर सकता। जिस आदमी को अपने मन को कहीं लगाना आ जाए तो उसके भीतर रस आना शुरू हो जाता है। जैसे साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, जिस भी विषय पर मन टिक गया, जिसमें मन पूरी तरह से लग गया तो मन लगने का मतलब है कि मन को उसमें रस आना शुरू हो गया।

जैसे कुछ लोग तार या रस्सी पर चलते हैं, कुछ लोग तो अपने मन तथा प्राण शक्ति को एक जगह ठहराकर मोटे-मजबूत सरिए को गले से मोड़ देते हैं, कांच को हाथों से पीसते हैं यह मन एवं प्राणों की एकाग्रता की शक्ति है। एकाग्र मन की शक्ति इतनी अद्भुत होती है कि पहले हमारे साथ गुरूकुल में एक विद्यार्थी था जो तीर चलाकर मोमबत्ती को बुझाता था। वह ऐसा भी अभ्यास दिखाता था कि आप डंडे पर डंडे को मारिए और वह आंखों पर पट्टी बांधकर पीछे की तरफ से तीर चलाता था, तो जहां से आवाज आती थी वहां जाकर उसका तीर लगता था। तो ये है मन की एकाग्रता की शक्ति। शब्द पर ध्यान टिकाया और मन को एकाग्र करके ध्वनि को पहचान कर ऐसा शब्द भेदी बाण चलाना और शीशे में देखकर उल्टी तरफ रखी हुई मोमबत्ती को बुझाना, ये एकाग्रता की शक्ति है। कोई अगर ऐसी एकाग्रता चाहते हैं, तो यह अद्भुत शक्ति उसके अंदर आ सकती है। व्यक्ति अगर अपनी शक्तियों को जागृत करे, सही दिशा में मन को एकाग्र करना सीख जाए तो वह सब कुछ कर सकता है। अभ्यास के द्वारा आप वहां तक जा सकते हैं, जहां तक आपकी कल्पनाएं भी नहीं जाती हैं।

मन की दो स्थितियां विशेष हैं, व्यग्रता या एकाग्रता। व्यग्रता अर्थात् व्याकुलता छटपटाहट ये मन में आ जाएं तो व्यक्ति सोचता है कि वह कर लूं, इधर चला जाऊं, उधर चला जाऊं, इसको इधर कर दूं, उसको उधर कर दूं, उसको यह कह दूं, इसको यह कह दूं, इस उथल-पुथल में ही मन विचलित रहता है। ये मन की व्यग्रता है, अशांत मन की बिखरी हुई स्थिति है। मन की दूसरी दशा एकाग्रता की है, जिसमें उसे अपना लक्ष्य याद है। मन को एकाग्र रखने के लिए अपने व्यवहार में शांति और मन में उल्लास रखिए। जीवन की राह में, रिश्ते-नातों में, कार्यालय में या व्यापार के स्थान पर जो भी मिले सबसे हंसते-मुस्कराते हुए प्रेमपूर्वक व्यवहार करते जाएं। तो पहला कार्य हमें करना होगा वह शिथिलकरण, तनाव से रहित, दबाव से रहित होकर अपने आपको शांत करना है, इस शांति में थोड़ी-सी मुस्कराहट मिलानी है, इस शांति में थोड़ा-सा प्रसन्नता का भाव सम्मिलित करना है, इस शांति में थोड़ा-सा उल्लास होना चाहिए। बिलकुल इस तरह से सोचिए जैसे मेरे पास कोई अभाव नहीं है। कोई रिक्तता नहीं है, केवल शांति है और शांति है। इस तरह की विचारधारा बनाकर मन को संतुलित करना है और फिर एकाग्रता को धारण करके अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होना है।

नियंत्रण-मन-शक्ति

नियंत्रण मन शक्ति मनुष्य की महान शक्ति है। यह बिलकुल वैसे ही है जैसे गाड़ी में ब्रेक! गाड़ी कितनी भी महंगी हो, कितनी भी आकर्षक हो, अगर उसमें ब्रेक नहीं हैं तो आप उसमें बैठकर आनंद नहीं ले सकते इसलिए अपने मन में नियंत्रण-मन शक्ति को जागृत कीजिए। जहां, जिस स्थिति में आप स्वयं को रोकना चाहें वहां रोक लें, आपको यह समझ आ जाए कि मैं अपने आपको कहां रोकूंगा? कहां अपने आपको जोश दिलाउंगा? कहां मुझे तेजी से दौड़ना है, कहां धीरे-धीरे चलना है, किस क्षेत्र में कितनी गति करनी है? अगर रास्ता गलत है तो वहां स्वयं रुक जाऊं, वहां अपने आप ब्रेक लग जाएं, जैसे गाड़ी चलाने वाले ड्रॉइवर के सामने कोई आ जाए तो उसका पैर एक दम अपने आप ब्रेक पर चला जाता हैं।

यह नियंत्रण वाली, उत्साह वाली शक्ति बाहर नहीं हमारे अंदर ही है, बस वहां तक जाना है, फिर उस शक्ति को विकसित करना है। उसमें आपको क्या खास करना है? हर विपरित स्थिति का आपको आनंद लेना है, अपनी संयम शक्ति का स्वाद लेना है, यह कैसे संभव होगा? जो चीज आपको पसंद है, वह नहीं खानी है। जो पीने वाली चीजें पसंद हैं, वे नहीं पीनी हैं। जहां रिश्तों में कड़वाहट है, कड़वे शब्द जहां कहे जाते हैं, जहां जवाब देना आपको अच्छा लग रहा है कि इसको एक के बजाए चार सुनाके आऊं, अगर वहां आप स्वयं को मौन रख सके, उस स्थिति का आनंद ले सके तो फिर भीतर ऊर्जा बढ़ने लगेगी, आपको आनंद महसूस होने लगेगा। यह आनंद का स्वाद बड़ा निराला होता है, इसे आप जब महसूस करेंगे तब इसके स्वाद का पता चलेगा। नियंत्रण-संयम शक्ति का स्वाद बड़ा अद्भुत होता है, इसलिए नियंत्रित करिए अपने आपको।

फिर जागरूकता का स्वाद लीजिए- आलस्य नहीं करिए, मन कहता है कि आलस्य आ रहा है, बहाने बना देता है कि यह कार्य कल कर लेगें, परसों कर लेगें। इस टाल-मटोल से बचना है, मन को कहिए कि नहीं आज ही यह कार्य करना है, अभी करना है, जब आप आलस्य को जीतकर अपने कार्य को पूर्ण कर लेंगे, तब आपको अच्छा लगेगा, आनंद आएगा। फिर आपका मन एकाग्र होने लगेगा, आप अपने मन के मालिक बन जाएंगे।

लेकिन बीच-बीच में आपको स्वाद की लहरें भी हिलाती-डुलाती हैं। दुनिया में तरह-तरह के स्वाद हैं, चाहे वह जिहवा का स्वाद हो या त्वचा के स्पर्श का स्वाद हो, रंग-रूप का स्वाद या कानों से जो भी हम मधुर से मधुर सुनना चाहते हैं, उन रसीले शब्दों का स्वाद हो, सबके स्वाद भी अलग-अलग हैं।

मधुरताएं भी सबकी अलग-अलग हैं। किसी को दुश्मन की निंदा सुनना ही मधुर लगता है, इससे अच्छा और मधुर उन्हें कुछ लगता ही नहीं। किसी-किसी व्यक्ति की आदत होती है कि वह आत्मप्रशंसा के शब्दों में ही रस लेता है, उसे प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है। प्रत्येक मनुष्य के अपने माधुर्य अलग हैं। जहां भी आपका मन टिका हुआ है, उधर ही मन आपको भटका रहा है, इन सबसे अपने आपको रोकते हुए संयम करना है। नियंत्रण रखना है किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि आप स्वाद लेना ही छोड़ दें। जब आप खाने के लिए जाएं तो खाने में पूरा स्वाद लीजिए, लेकिन हर समय ही बकरी की तरह से मुंह चलता रहे, प्लेट सामने रहे, हर समय कुछ-न-कुछ खा रहे हैं, चिड़ियाओं की तरह दाने चुग रहे हैं। जैसे कोई अपनी गाड़ी की टंकी में पैट्रोल डालते ही रहे, डालते ही रहे, जो भी पेट्रोल-पंप रास्ते में आए, उससे ही थोड़ा-सा पेट्रोल और डलवा लूं, थोड़ा-सा और डलवा लूं, तो यह उचित नहीं है। यह तो मन की हवस है, जो कभी पूरी नहीं होती। ऐसा व्यक्ति दिन-रात अशांत रहता है।

समयानुसार एक बार ठीक समय से भोजन ले लिया जाए तो वह ठीक है, लेकिन हर समय ही आप कुछ-न-कुछ खाते ही रहोगे तो वह शरीर को बीमार करेगा। ऐसे ही मन हर समय अलग-अलग स्वादों के पीछे रहे तो आप अपने संयम का आनंद नहीं ले सकेंगे। जो स्वाद भूख में है, वह किसी व्यंजन में नहीं है। जब अच्छी तरह से भूख जाग जाए तब आप खाना खाइए। उस समय आपको सूखी रोटी में भी जो स्वाद मिलेगा, वह आपको 56 प्रकार के व्यंजनों में भी आनंद नहीं मिल सकता। इसलिए नियंत्रण का स्वाद लीजिए, इसी तरह जागरूकता का स्वाद लीजिए, जब जागरूकता का स्वाद आएगा, तो आपको नियम का स्वाद भी आएगा।

जिसके भीतर नियंत्रण शक्ति है, वह नियम वाला अपने आप हो जाता है, उसका

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन वस्त्रों का वितरण

श्री राम मन्दिर शिलान्यास एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर पूर्वी दिल्ली एवं पश्चिमी दिल्ली में हुए कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 5 अगस्त2020 को आर्य समाज सूरजमल विहार और गौशाला गाजीपुर में रामजन्मभूमि शिलान्यास के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। 'राम' जो किसी धर्म में नहीं बंधा,जो किसी जाति से नहीं बँधा, जो किसी संस्कृति, देश से नहीं बंधा। वह तो सम्पूर्ण मानव जाति के हर पहलू को छूता है। आज उसी राम के मन्दिर के निर्माण का भूमि पूजन है, जो हर मानव के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण सुखद अनुभव रहेगा। इसी उपलक्ष्य में आर्य समाज के प्रकल्प 'सहयोग' ने यज्ञ का आयोजन किया और जरूरतमंद लोगों को वस्त्रादि भेंट किए। यज्ञ में सम्मिलित हुए लोगों को हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रचित पुस्तक 'हिंदू संगठन' भेंट स्वरूप दी गयी और सभी को "सहयोग" की ओर से राम मन्दिर के भूमि पूजन की हार्दिक शुभकामनाएँ दी गई।

दिनांक 12 अगस्त 2020 को चित्रा विहार दिल्ली में जन्माष्टमी के अवसर पर यज्ञ व वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। संसार को कर्म का सिद्धांत समझाने वाले कर्मयोगी योगेश्वर श्री कृष्ण के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर आर्य समाज ने दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में यज्ञों का आयोजन किया। इसी कड़ी में चित्रा विहार क्षेत्र में 'सहयोग' ने भी यज्ञ के साथ वस्त्र वितरण का कार्यक्रम किया। यज्ञ में महिलाओं व बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और सभी ने स्वयं आगे आ आकर यज्ञ में अपनी आहुति दी और रोड पर गर्मी व तेज धूप के होते हुए भी सभी लोग पूरी तन्मयता से यज्ञ की पूर्णाहुति तक बैठे रहें। आइए श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी राष्ट्रहित में धर्म के कार्य को आगे बढ़ाए और विश्व को संदेश दे कि हम श्री कृष्ण व अर्जुन जैसे योद्धाओं के वंशज हैं जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए उन पितामहों की छाती भी छलनी करने से नही चूकेंगे जिनकी गोद में खेलकर हम बड़े हुए हैं।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

श्री राममन्दिर शिलान्यास के अवसर पर आर्यसमाज सूरजमल विहार एवं महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गौशाला गाजीपुर में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण

योगिराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर चित्रा विहार, दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण

सदा उत्साहित रहने के उपाय

(Methods of Enthusiasm)

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

जीवन में सुख-दु:ख, विघ्न, बाधायें आती ही रहती हैं। जिन्हें देख कर कुछ लोग अच्छे कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते परन्तु जो शूरवीर हैं वे जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिसमें बिखेर हुये शूल नहीं नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हों। प्रसन्नता पूर्वक कार्य करने वालों की कठिनाईयाँ अपने आप सुलझती जाती हैं।

गतांक से आगे -

तनाव रहित रहें

तनाव व्यक्ति और वातावरण के मध्य होने वाली क्रिया और प्रतिक्रिया को कहते हैं। कुछ सीमा तक तनाव हमें परिस्थितियों से संघर्ष करने का सामर्थ्य प्रदान करता है और कर्त्तव्य के प्रति जागरूक भी करता है। परन्तु जब तनाव हर समय बना रहे तब उसका दुष्प्रभाव शरीर एवं मस्तिष्क दोनों पर पड़ता है। इसे कम करने के लिये प्रतिदिन व्यायाम, आसन, प्राणायाम, खेल, ध्यान-धारणा एवं मनोरंजन के लिये समय निकालें। आज का काम कल पर न छोड़ें।

अपने भाग्य की सराहना करें

व्यक्ति अपने से बड़ों के धन ऐश्वर्य एवं पद-प्रतिष्ठा को देख दु:खी होता है कि मेरे पास इतने साधन क्यों नहीं हैं। उसे यह भी देखना चाहिये कि मेरे से नीचे स्तर के बहुत सारे लोग हैं और वे भी आराम से जीवन जी रहे हैं तो फिर मुझे तो परमात्मा ने उत्तम बुद्धि, स्वास्थ्य एवं अन्य सुख-सुविधायें प्रदान की हैं। मैं अपने भाग्य को दोष क्यों दूँ कि मुझे यह नहीं मिला मुझे वह नहीं मिला। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में गहराई से विचार करें तो पता चलेगा कि जितना हम समझते हैं वह भी उतना सुखी नहीं है।

नकारात्मक वातावरण से दूर रहें

हमें मनुष्य जन्म शुभ कर्म करने और सुख, आनन्द की प्राप्ति के लिये मिला है। जो लोग निराशा की बात करते हैं वे जीवन संग्राम में असफल रहें हैं। उनके साथ रहने से आपका उत्साह, ऊर्जा और उमंग क्षीण हो जायेगी। हँसने और प्रसन्न रहने वाले के साथ सभी रहना चाहते हैं और रोनी सूरत वालों के समीप कोई भी नहीं फटकता। जहाँ का वातावरण नकारात्मक लोगों से घिरा है उससे दूर रहना ही अच्छा है।

मोटापा न बढ़ने दें

शरीर में चर्बी बढ़ जाने पर व्यक्ति की। कार्य शक्ति कम हो जाती है। आलस्य, निद्रा घेर लेते हैं। इनका निवारण करने के लिये प्रतिदिन व्यायाम भ्रमण और भोजन पर नियन्त्रण करना आवश्यक है।

सबको सम्मान दें

प्रत्येक व्यक्ति सम्मान चाहता है। आप दूसरों का सम्मान करेंगे तो आपको भी सम्मान ही मिलेगा। आम बोने वाले को आम और बबूल लगाने वाले को कांटे ही मिलेंगे। किसी के जो वास्तविक गुण हैं उनकी चर्चा दूसरों के सामने अवश्य करें।

सेवा कार्यों में सहयोग करें

किसी जरूरत वाले व्यक्ति के कार्य में सहयोग देना सेवा कहलाता हैं। सेवा मानव को मानव से जोड़ने वाली कड़ी है। रोगी को औषध देना, साधन हीन बच्चों को संसाधन उपलब्ध कराना, पढ़ाना, वृद्ध पुरुषों की सहायता, राष्ट्रीय आपदा में योगदान आदि बहुत से कार्य हैं जिनके करने से मन को शान्ति मिलती है।

ईश्वर चिन्तन करना

अपना कुछ समय निकालकर प्रात: सायं ईश्वर चिन्तन करें। ईश्वर आनन्द स्वरूप है और प्रत्येक अच्छे कार्य में सहायता करता है। वह अशरण का शरण और शान्ति का धाम है। जैसे आप दूसरे व्यक्तियों से बात करते हैं वैसे ही अपने मन की बात ईश्वर के समक्ष रखिये और समाधान देने की प्रार्थना कीजिये।

- *क्रमश:*

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

After coming out of the jail Swami Shraddhanand went back to Delhi. Soon afterwards he received an invitation from Agra. Some Rajputs there, who were Hindus in everything but in name, were to be converted to Hinduism. This work appealed to him, and he toured the United Provinces for this purpose. He was successful in his mission and won over the Rajputs. The Rajputs were welcomed back to the fold. In the meantime the Mohammadans took offence at this and tried to undo the Swami's work. But they failed. Then the Swami established the All-India Shuddhi Sabha. The object of this was to bring non-Hindus into the fold of Hinduism.

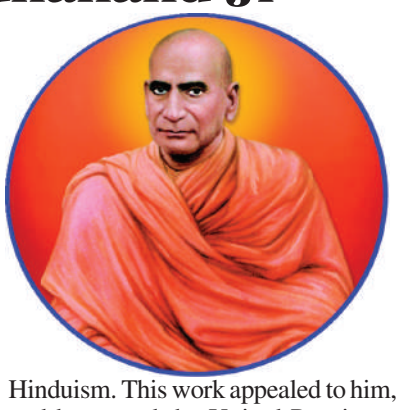

Then Swami Shraddhanand said to the authorities, "If you do not open fire on the people, I will send them away to their homes." They agreed to this. So the Swami asked the people to follow him to a place where a meeting was to be held. They all obeyed. He then marched at the head of a large number of people in that direction. But he had not gone very far when he was stopped by some Gurkha soldiers. Not knowing what the matter was they wanted to charge on the crowd. But after baring his breast Swami Shraddhanand went forward and said, "You can charge on me but not on these people." This fearlessness on his part subdued the soldiers. They then let the crowd pass without any trouble.

This act of Swami Shraddhanand made him very dear to the people. He became their hero. They began to look upon him as their guardian and defender. Not only Hindus but also Mohammadans came to hold him in high esteem.

To show their regard for him the Mohammadans asked him to address them in the Jumma Masjid. This was a great honour for the Swami, because no Hindu had ever done so before. Nor has any Hindu been asked to do so since. Swami Shraddhanand then stood on the platform of the mosque and spoke words of courage and hope to the people. He talked to them about freedom. He told them about the blessings of Hindu-Muslim unity. The words that fell from his lips produced a deep effect on them.

Some time after this Swami Shraddhanand heard about the atrocities of Martial Law in the Punjab. So he went to Amritsar to see these things with his own eyes. He found the people there in great distress. But he comforted them as much as he could. He collected money for them, as well as helped those Indian leaders who wanted to enquire into the matter.

That very year the Indian National Congress was to be held at Arnritsar. But the people were so afraid that they did not want to have it there. Swami Shraddhanand came forward and said, "We will hold the Congress here, whatever happens." This heartened the people and they agreed. So he had to make all kinds of preparations. All this meant much work on his part, but he did not mind. At last the session ofthe Congress was held. Be was elected Chairman ofthe Reception Co-mmittee. The address that he wrote at that time was quite unique. It was full of courage and hope. It was also written in Hindi, a thing which had never been done before.

After this Swamiji had to go back to the Gurukula because it was in difficulties. Everybody felt that none but Swami Shraddhanand could manage itproperly. After much hesitation Swamiji made up his mind to go there. He could not bear to think that the Gurukula which he had founded should suffer in any way.

On reaching the Gurukula he saw that its immediate need was money. So he undertook a voyage to Burma to collect funds. There he succeeded in his object. But on his return he fell dangerously ill. On recovering from this illness he realized that he was not strong enough to manage the Gurukula. So he resigned and went back to Delhi.

At Delhi three things engaged his attention. In the first place, he wanted to build a memorial to the victims of Martial Law. But this project failed on account oflack of funds. Then he turned his attention to the uplift of the untouchables. In the suburbs of Delhi there were a large number of chamars. He opened schools for them and worked for them in other ways also. The thing which attracted him most, however, was the work of unifying the Hindus. He became one of the founders of the Hindu Maha Sabha. The object of this was to unite the Hindus in social, political and religious matters.

About this time Guru ka Bagh, near Amritsar, became a scene of conflict between the Sikhs and the mahantofthat place. The mahant claimed the place for himself, but the Sikhs said that it belonged to the Panth. The mahant, therefore, refused to allow the Sikhs to take wood for the free langar or kitchen evertheless the Sikhs went there in large numbers to defy the mahant. But the police came to his aid. So a large number of them were sent to jail every day. When Swami Shraddhanand learnt about it he went to Amritsar. But he was arrested there and sent to jail for a year. This was done to keep him from taking part in the agitation.

After coming out of the jail Swami Shraddhanand went back to Delhi. Soon afterwards he received an invitation from Agra. Some Rajputs there, who were Hindus in everything but in name, were to be converted to Hinduism. This work appealed to him, and he toured the United Provinces for this purpose. He was successful in his mission and won over the Rajputs. The Rajputs were welcomed back to the fold. In the meantime the Mohammadans took offence at this and tried to undo the Swami's work. But they failed. Then the Swami established the All-India Shuddhi Sabha. The object of this was to bring non-Hindus into the fold of Hinduism.

As the Swami was interested in the unification ofthe Hindus he did a lot of work for the next session of the Hindu Maha Sabha, which was to be held at Benares. But the Brahmins there disappointed him very much. They did not want to have anything to do with the uplift of the untouchables. They refused to listen either to Pt. Madan Mohan Malaviya or to Swami Shraddhanand. At last the Hindu Maha Sabha passed a resolution about the untouchables which did not mean anything. This filled the Swami with grave fear about the future of the Hindus.

Still the Swami did not slacken his efforts in this direction. On his return to Delhi he organized the Dalit-Uddhar Sabha. To carry out this mission he gathered round him a band of workers. All these wanted to raise the untouchables by giving them education.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 4 का शेष

मन की एकाग्रता और नियन्त्रण .....

स्वयं के ऊपर स्वयं का अनुशासन चलता है फिर वह ठीक टाइम से रोज सुबह उठता है, उसके अंदर की घड़ी ठीक से काम करने लगती है। वह सोचने लगता है कि सूरज रोज समय से उगता है। मैं भी सूरज की तरह से तेजस्वी बनूंगा, ठीक समय से जागृत होकर अपने कार्य करुंगा। जिस तरह से हवाएं प्राणवायु बनकर बह रही हैं, ऐसे ही मैं भी खुशियां बांटता हुआ गतिशील रहूंगा। जिस प्रकार से चंद्रमा सबको शीतलता दे रहा है, शांति और सौंदर्य लेकर आता है, मैं भी संसार में चंद्रमा बनकर शांति-शीतलता बांटूगा, किसी आंख का कांटा नहीं बनूंगा, किसी के मन में नहीं चुभूंगा। फूल की तरह से खिलकर, सौंदर्य से युक्त होकर सारे संसार को शोभायमान करूंगा। मैं पिता परमात्मा की संतान हूं। उसके हाथ की बनाई हुई मूर्ति हूं, अपने आपको एक सौंदर्य से परिपूर्ण कर रहा हूं, फिर मन की सुंदरता का स्वाद लीजिए। आपके बोलने का सौंदर्य, आपका शांत होकर सुनने का तरीका, आपके उठने-बैठने का सौंदर्य सबका स्वाद मिलने लगेगा। फिर थोड़ा-सा और आगे बढ़िए और विचारिए कि मैं ज्योतिर्मय हूं, प्रकाशमय हूं, मैं अंधेरों में गुम क्यों हो जाऊं? मैं तो स्वयं प्रकाशित होकर, सारी धरती पर प्रकाश फैलाऊंगा। मैं ईर्ष्या-द्वेष में नहीं जलूंगा, दीए की तरह से ज्योतित हो जियूंगा, किसी का वैभव देखकर मुझे नहीं जलना है, बल्कि दीए की तरह से ज्योतिर्मय होना है, मुझे स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन को भी रोशन करना है और अपनी जिंदगी को भी रोशन बनाना है। मुझे नियंत्रण-संयमन शक्ति का स्वाद लेना है।

पृष्ठ 2 का शेष

क्या नई शिक्षा नीति से इतिहास ....

पुस्तक में लिखा है कि इन नकारवादियों का मक्का-मदीना जेएनयू और एएमयू है और इसमें प्रमुख नकारवादी विपिन चंद्रा, के. एन. पनिक्कर, एस. गोपाल, रोमिला थापर, हरवंश मुखिया, इरफान हबीब, आर.एस. शर्मा, ज्ञानेन्द्र पांडेय, सुशील श्रीवास्तव, असगर अली इंजीनियर तथा मुस्लिम फंडा मेन्टलिस्ट सैयद शहाबुद्दीन आदि हैं। मानवता के विरुद्ध हुए अपराध को अस्वीकार करने की इनकी तकनीक वही है, जो दुनिया के अन्य नकारवादी अपनाते हैं।

अपनाते कैसे हैं, इसे बिन्दुवार समझिये। एक तो असली साक्ष्यों और सबूतों को पाठक की नजरों से ओझल करना मसलन जैसे 1632 में कश्मीर से लौटते समय में शाहजहाँ को बताया गया कि अनेकों मुस्लिम बनायी गयी महिलायें फिर से हिन्दू हो गई हैं और उन्होंने हिन्दू परिवारों में शादी कर ली है। शहंशाह के आदेश पर इन सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लिया गया। उन सभी पर इतना आर्थिक दण्ड थोपा गया कि उनमें से कोई भुगतान नहीं कर सका। तब इस्लाम स्वीकार कर लेने और मृत्यु में से एक को चुन लेने का विकल्प दिया गया। जिन्होनें धर्मान्तरण स्वीकार नहीं किया, उन सभी पुरुषों के सर काट दिए गए।

लगभग 4500 हिन्दू महिलाओं को जबरन मुसलमान बना लिया गया और उन्हें सिपहसालारों, अफसरों और शहंशाह के नजदीकी लोगों और रिश्तेदारों के हरम में भेज दिया गया।

दूसरा यदि साक्ष्य के अस्तित्व को अस्वीकार न किया जा सके, तो उसे तोड़-मरोड़ का प्रस्तुत करना। जैसे शाहजहाँ से निकाह करते समय मुमताज कोई कुंवारी लड़की नहीं थी बल्कि वो भी शादीशुदा थी। उसका पति शाहजहाँ की सेना में सूबेदार था जिसका नाम शेर अफगान खान था। शाहजहाँ ने शेर अफगान खान की हत्या कर मुमताज से निकाह किया था, लेकिन हमें पढ़ाया गया कि शाहजहाँ मुमताज से प्रेम करता था।

तीसरा, यदि साक्ष्यों को अनदेखा करना संभव न हो तो उसके अस्तित्व को अस्वीकार किया जाए। जैसे अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के बाद रानी पद्मिनी समेत हजारों महिलाओं के जौहर को यह कहकर अस्वीकार कर दिया जाये कि वो तो बस एक कविता है, उसमें सच्चाई नहीं है। जबकि चित्तौड़ के दुर्ग में जोहर कुंड अभी भी सुरक्षित है।

चौथा यदि फिर भी तथ्यों का सामना करना पड़े, तो पीड़ितों को ही दोषी ठहराना। जैसे महाराणा प्रताप को गलत ठहराया जाना, कि गलती प्रताप की थी, अकबर ने तो उसे सम्मान के साथ मिलने बुलाया था। या औरंगजेब ने अपने शासनकाल में बहुत लोगों की हत्याएं की, बहुत लोगों को निर्ममता से प्रताड़ित किया, बहुत सारे मंदिरों को तोड़ा और अपने भाई दारा-शिकोह की गर्दन उतारी, लेकिन - 'औरंगजेब एक टोपी सिलने वाला उदार शासक था।'

पांचवां, यदि साक्ष्य छुपाये न जा सके, तो विषय के अतिरिक्त अन्य मामलों को उठाना, उदाहरण के लिए मध्य एशिया में आतंकियों की हिंसा के बावजूद आतंकियों को बचाकर यहूदियों को दोषी ठहराना। भारत में सभी मुद्दों पर हिंदुओं के संबंध में उनमें जातिवाद दिखाना और उन्हें साम्प्रदायिक या कट्टर बताना आदि।

छठा, यदि लोग फिर भी आपके उट-पटांग निर्णय को अस्वीकार करें, तो उन्हीं के ऊपर तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने तथा इतिहास का राजनीतिक दुरुपयोग का आरोप लगाना। जैसे अयोध्या, काशी या बनारस की मस्जिद का जिक्र करते ही इसे राजनितिक दांव-पेंच बताना और यह कहना कि बीजेपी धर्म की राजनीति कर रही है।

सातवाँ, ऐसे विद्वानों की निंदा करो, जिनके द्वारा दिए गए साक्ष्य असुविधाजनक हों, जो इनके गले न उतरें तो उन्हें पागल-सनकी कहना, उनका उपहास उड़ाना, और उन्हें इतिहास का कम ज्ञान होना बताना। जैसे अक्सर ये लोग सुब्रमण्यम स्वामी या अन्य वैदिक इतिहासकारों को शिकार बनाते हैं।

इन सात बिन्दुओं के अलावा अन्य भी कई बिंदु हैं जिन्हें लेकर इनका शुरू से ही आक्रमण का यही सबसे मजबूत हथियार रहा है। इसी हथियार के दम पर भारत का इतिहास बदल डाला गया जबकि यह शुद्ध रूप से बौद्धिक बेईमानी है। अब देखना ये है कि नई शिक्षा नीति में हमारा इतिहास कितना स्वतंत्र होगा, या नहीं होगा?

- *सम्पादक*

शोक समाचार

आर्य लेखक श्री सुमन कुमार वैदिक नहीं रहे

ग्रेटर नोएडा निवासी आर्यलेखक श्री सुमन कुमार वैदिक का 18 अगस्त 2020 को ग्रेटर नोएडा के एक चिकित्सालय में निधन हो गया। वे लगभग एक सप्ताह से रुग्ण चल रहे थे। उनका जीवन आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित रहा। वे ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के साहित्य के भी विशिष्ट प्रचारक प्रसारक थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

श्री रूपचन्द आर्य जी को पितृशोक

आर्यसमाज जैकबपुरा, गुरुग्राम (हरियाणा) के वरिष्ठ सदस्य श्री रूपचन्द आर्य जी के पूज्य पिता श्री प्रवीण अग्रवाल जी का 5 अगस्त, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया।

श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना जी का निधन

आर्यसमाज विवेक विहार के पूर्व प्रधान, वर्तमान वरिष्ठ उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य एवं सभा की नशाबन्दी समिति संयोजक श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना जी का दिनांक 24 अगस्त, 2020 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ ज्वाला नगर शमशान घाट पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 अगस्त, 2020 से रविवार 23 अगस्त, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20-21 अगस्त, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 अगस्त, 2020

74 वां स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया

महाशय धर्मपाल (MDH) दयानंद आर्य विद्या निकेतन बामनिया में 74 वां स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कोरोना महामारी के कारण कार्यक्रम में सोशल डिस्टेंसिंग का पूर्णरूप से पालन किया गया। कार्यक्रम में प्रबंधन समिति सदस्य श्री गोवर्धन सिंह जी राठौर द्वारा ध्वजारोहण कर किया गया। ज्ञात हो कि यह पहला अवसर है कि कोरोना वायरस के चलते इस बार विद्यालय में छात्रों की अनुपस्थिति में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। संस्था अध्यक्ष पद्मभूषण माननीय महाशय धर्मपाल जी, संस्था के उप प्रधान विनय आर्य, महामंत्री श्री जोगिंदर आर्य, शिक्षा निदेशक श्रीमती अनु वासुदेवा, प्रोजेक्ट मैनेजर श्री बिपिन भल्ला, श्री गोवर्धन सिंह राठौर, श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री विश्वास सोनी, संगीता जी सोनी, श्री संजय मखोड़, प्राचार्य श्री प्रवीण अत्रे व समस्त स्टाफ ने सभी विद्यार्थियों व पालकों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बलिदान देने वाले सभी बलिदानियों को नमन किया। कार्यक्रम में स्टाफ के श्रीमती तेजस्विनी पंवार, श्रीमती मधु परिहार, श्रीमती रचना शर्मा, श्रीमती ज्योति खंडेल वाल, श्री उमेश गोयल एवं मनोज कुमार मालवीय आदि सदस्य उपस्थित रहे।

प्रतिष्ठा में,

सभी आर्यजनों को सादर नमस्ते सभी को सूचित किया जाता है कि वैदिक विद्वानों की ज्ञानवर्धक व्याख्यान माला कल से जूम एप से हटाकर समस्त कार्यक्रम यूट्यूब के आर्य संदेश टीवी पर

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

अत: आपसे अनुरोध है कि
आप यह कार्यक्रम आर्य संदेश टीवी चैनल यूट्यूब पर देखना आरंभ कर देवें।
यूट्यूब पर पिक्चर ज्यादा अच्छी आती है, आवाज साफ सुनाई देती है
और लिंक से जुड़ना भी आसान है।

निवेदक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

उठो दयानंद के सिपाहियों

उठो दयानंद के सिपाहियों समय पुकार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।

उठो विश्व की सुनी आंखें काजल मांग रही हैं,
उठो अनगिनत द्रुपद सुताएं आंचल मांग रही है,
मरघट को पनघट सा कर दो सबकी प्यास बुझा दो।
भटक रहे हैं जो मरुस्थल में उनको राह दिखा दो।।

गले लगा उनको जिनको जग दुत्कार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।

उठो दयानंद के सिपाहियो समय पुकार रहा है,
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है,
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग लगा सकते हो,
तुम चाहो तो सागर में भी आग लगा सकते हो,
तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो खारे जल को सोम बना सकते हो।।

जातिवाद सबकी नस-नस में जहर उतार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।
उठो दयानंद के सिपाहियो समय पुकार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।

याद करो वह समय कभी जब तुमने वचन दिया था,
शायद वादा भूल गये जो ऋषि से कभी किया था,
वचन दिया था ओ३म् पताका कभी न झुकने देंगे।
हवन कुंड की आग घरों से कभी ना बुझने देंगे।।

ऋषियों का सद्ज्ञान मांग तुमसे उपहार रहा है,
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।
उठो दयानंद के सिपाहियों समय पुकार रहा है।।

कब तक नजर चुरा पाओगे आग बहुत फैली है,
उजली उजली दिखने वाली हर चादर मैली है
लेखराम का लहू पुकारे जरा आंख तो खोलो,
श्रद्धानंद का लहू पुकारे जरा आंख तो खोलो,
राजपाल का लहू पुकारे जरा आंख तो खोलो,

सारे मिलकर ऋषिवर की जय जय बोलो,
रक्त शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।
उठो दयानंद के सिपाहियों समय पुकार रहा है ।
देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है।।

- रघुनाथ आर्य
raghunatharya2016@gmail.com

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की

सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच –सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह